SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

21 वी सदी में किए गए भारत–पाकिस्तान के बीच शांति के प्रयास

रवि कुमार विश्वकर्मा, जूनियर रिसर्च फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रवि कुमार विश्वकर्मा, जूनियर रिसर्च फेलो
E-mail : bhu02ravi@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/04/2025
Revised on : 16/06/2025
Accepted on : 25/06/2025
Overall Similarity : 00% on 17/06/2025

शोध सार

इस शोध आलेख का शीर्षक "21 वी सदी में किए गए भारत–पाकिस्तान के बीच शांति के प्रयास" जिसमें शोधार्थी ने इस शोध आलेख में भारत–पाकिस्तान के बीच शांति स्थापना के लिए किए गए कार्यों का अध्ययन किया गया है। इस आलेख को पूर्ण करने के लिए ऐतिहासिक, तुलनात्मक व विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया हैं। इस शोध आलेख से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि दोनों देश के बीच शांति स्थापना के लिए प्रयास तो किए जाते रहे है लेकिन कोई ठोस परिणाम निकल कर नही आ पाया है। हालांकि शांति के प्रयासों को प्रभावित करने के अनेक कारणों का वर्णन व विश्लेषण इस आलेख में किया गया है साथ ही दोनो देशो के बीच विवाद किस प्रकार विश्व को प्रभावित करता है व विश्व के अनेक देशो व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का क्या योगदान रहा है शांति स्थापना में इसका वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द

भारत–पाकिस्तान, अंतर्राष्ट्रीय, विवाद, शांति वार्ता, आतंकवाद.

प्रस्तावना

भारत पाकिस्तान का उदय विभिषिका के काल में हुआ जिसमे हिन्दू, सिख, मुसलमान व अन्य धर्म को मानने वालो को विभाजन का विध्वंस सहना पडा जिसमें 10 लाख से अधिक लोगों को अपनी जान देने पड़ी जो दो नए राष्ट्रो के उदय की कीमत के रूप में चुकानी पड़ी, जिसके परिणाम स्वरूप भारत–पाकिस्तान जैसे दो दक्षिण एशिया के देश के रूप में दो देशो का उदय हुआ। भारत पाकिस्तान के बीच कई सारी ऐतिहासिक, सामाजिक नृजातीय भाषाई रहन–सहन की समानताए हैं, जो बहुत ही कम देशों के बीच देखने को मिलता हैं। हालांकि दोनो देशो के बीच कई सारे विवाद व कई सारे युद्ध हो चुका

हैं इस से भारत–पाकिस्तान के संबंध प्रभावित हुये हैं। पाकिस्तान, भारत का पड़ोसी होने के नाते भारत का यह कर्तव्य व हित में है कि वह अपने पडोसी के साथ सहअस्तित्व व सहयोग पूर्ण संबंध स्थापित करे। जैसा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री कहा करते थे कि "कभी पड़ोसी नही बदला जा सकता है" तब भी दोनों देशो के बीच कई सारे विवाद है जो कभी–कभी संघर्ष को रूप धारण कर लेता हैं। पूर्व में भारत–पाकिस्तान के बीच 1947–48, 1965, 1971, 1999 के दौरान युद्ध हो चुका हैं, जिससे दोनों देशों के मध्य संबंध में और ज्यादा कडवाहट आ गई है। इन कडवाहटों की शुरूआत मुख्यतः भारत के विभाजन के समय से ही उत्पन्न होते आई है जिसमें जम्मु और कश्मीर का विवाद सबसे पेचीदा विवाद है जिसके कारण दोनों देश के बीच कई विवाद व युद्ध हो चुके है। लेकिन जैसा कि अटल बिहारी वाजपेयी के कथनानुसार अपने पडोसी को बदल नही सकते, इस लिए दोनों देश के बीच कई सारे शांति स्थापित करने का प्रयास किया गया है जो दोनो देश के लिए हितकारी सिद्ध होता रहा हैं लेकिन इन शांति प्रयासों को सफल बनाने में कई सारी चुनौतियों का सामना करना पडा। विश्व के दो परमाणु सम्पन्न देश के बीच शांति स्थापना से विश्व व्यवस्था को अराजकता से मुक्त कराने में सहायता मिल सकती है। वर्तमान समय में भारत–पाकिस्तान के बीच संबंध जमें से दिखाई पडतें है इसका मुख्य कारण पाकिस्तान द्वारा प्रत्यायोजित आतंकवाद है। भारत के विदेश मंत्री के शब्दों मे कहे तो पाकिस्तान आतंकवाद के केन्द्र के रूप मे अपना पहचान बनाये हुये है। यह एक मुख्य कारण है जो भारत–पाकिस्तान संबंध को एक अंतहीन चक्र से बाहर निकलने नही दे रहा है पाकिस्तान एक ऐसा देश है जिसका निर्माण धर्म के आधार पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप मानवीय व्यवहार में एक सर्वोच्च चेतना का जो विकास हुआ वह भी संघर्ष व विवाद को बढ़ावा देने का कार्य किया है। विभाजन से वर्तमान तक देखे तो दोनों देश के बीच कई सारे विवाद के मुद्दे उभर कर सामने आये है जिससे दोनो देश के बीच टकराव को खत्म या कम करने के लिए भी समय–समय पर दोनो देशो व अंतर्राष्ट्रीय समुदायों की ओर से अनेक प्रयास किए गऐ है, जिसमें से अगर शुरूआत से देखे तो कई सारे समझौते किए गए है जो शांति स्थापना को बढ़ावा देने मे सहयोगी है, जैसे नेहरू–लियाकत समझौता, सिंधु जल समझौता ऐसे कई अनेक समझौते है जिसके माध्यम से दोनों देश के बीच शांति स्थापित करने की बात व प्रयास किये जाते रहे हैं।

1. 21 वी सदी शांति के प्रयास

इस शोध आलेख का प्रमुख शोध का विषय है 21वी सदी में भारत–पाकिस्तान के बीच शांति के प्रयास को उजागर करना। 21 वी सदी में भारत–पाकिस्तान के बीच शांति के लिए किये गए प्रयासों में 20 वी सदी के आखिरी दशक में हुए समझौता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हो जाता है। 1999 में भारत के प्रधानमंत्री ने "लाहौर बस यात्रा" के माध्यम से दोनों देश के बीच विश्वास मजबूत करने के लिए यह प्रयास किये जिसका परिणाम सकारात्मक नही रहा। इस समझौते के कुछ ही दिनों के बाद पाकिस्तान ने भारत पर कारगिल की लड़ाई थोप दिया, यहाँ से ही भारत पाकिस्तान के बीच 21 वी सदी में कैसे संबंध होंगे इसका अनुमान लगाया जाने लगा था। 21 वी सदी मे भारत पाकिस्तान के मध्य 2001 में आगरा सम्मेलन का आयोजन किया जाता है जिसमे भारत के प्रधानमंत्री व पाकिस्तान के राष्ट्रपति सम्मेलन में भाग लिए जो एक विफल सम्मेलन के रूप में निकल कर आया जिसके अनेक कारण भी रहे, जैसे पाकिस्तान के राष्ट्रपति के तरफ से भारत मे आ कर भारत के मुसलमानों को उकसाने का प्रयास करना, भारत पर कई सारे आरोपों प्रतिरोपित करना। आगरा सम्मेलन आयोजित करने का मुख्य कारण कश्मीर समस्या को सुलझाना, आतंकवाद को लेकर बात करना था जिससे दोनों देश आतंकवादी संगठनों व घटनाओं पर लगाम लगा सके, और सीमा सुरक्षा को बढ़ावा देना, आर्थिक सहयोग को बढ़ाना, संस्कृतिक आदान–प्रदान करना, आतंकवाद से निपटने के लिए साझा प्रयास करना, परन्तु इन मुद्दो पर सहमती न बनने से यह सम्मेलन विफल हो गया, विफल होने मे प्रमुख भुमिका दोनो देशो के बीच व्याप्त अविश्वास का कारण बना।

2. व्यापक संवाद ढ़ॉचा

व्यापक संवाद ढ़ॉचा भारत और पाकिस्तान के बीच में जनवरी 2004 में शुरू की गई थी, जो भारत के प्रधानमंत्री अटज बिहारी वाजपाये और पाकिसतानी राष्ट्रपति जनरल प्रवेश मुशर्रफ के द्वारा यह शांति का प्रयास किया गया था, जिसमें 8 क्षेत्रों को चिन्हित कर शांति वर्ता की शुरूआत की गई थी जो हैं शांति व सुरक्षा और सी बि एम, जम्मु

और कश्मीर, सियाचिन, सर क्रिक, जल सुरक्षा, आतंकवाद, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग और ड्रग ट्रैफिकिंग पर वार्ता की गई। हालांकि यह शांति वार्ता असफल शांति वार्ता के तौर पर उभर कर सामने आई। इसके असफल होने के पीछे कई सारे कारण रहे। अफगानिस्तान में स्थित भारत के उच्चायुक्त पर आत्मघाती हमला किया गया इसके उपरान्त भारत के व्यापारिक राजधानी कहे जाने वाले मुम्बई पर आतंकवादी आतंकवादी हमला किया गया, जिसमें 183 से अधिक व्यक्तियों की निर्मम हत्या कर दी गई, इस हमला में शामिल पाकिस्तानी मूल के आतंकवादी शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप उस समय के भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने व्यापक संवाद ढ़ॉचा को रोक दिया जिसका परिणाम यह निकला कि यह समझौता पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हुआ, जिसमें न तो सियाचिन और न ही सर क्रिक जैसे मुद्धों पर कोइ बात बनी और न ही किसी अन्य मुद्धों पर। 26/11 आतंकवादी हमला ने दोनों देशो के संबंधों को बुरी तरह प्रभावित किया, जिसमें भारतीय जनता द्वारा पाकिस्तान के विरूद्ध कार्यवाही करने की मांग को लेकर सरकार पर दबाव बनाया गया जिसके कारण दोनो देशों के द्विपक्षीय संबंध में तनाव देखने को मिला, जिसके परिणामस्वरूप भारत को पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय वार्ता निलंबित करना पडा।

3. मुम्बई सम्मेलन (2006)

भारत पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंधो को सुधारने व दोनो पक्षो के बीच शांति स्थापना के लिए आयोजित एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक सम्मेलन था। यह भारत के प्रयासों से आयोजित होने वाला व्यापक संवाद ढ़ॉचे के तहत हो रहे प्रयासों का ही हिस्सा था। इस सम्मेलन में मुख्यतः भारत के तरफ से प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह और पाकिस्तान की ओर से राष्ट्रपति प्रवेश मुशर्रफ जो कि कई उद्धेश्यों के साथ इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए मिले थे, जिनमें प्रमुख था व्यापार पर संवाद को पुनर्जीवित करना, आतंकवाद जैसे मुद्धों को सुलझाना, आर्थिक संबंधों को बढ़ाने के लिए कार्य करना, दोनो देश की जनता के बीच संबंधों को बढ़ाना जिसमें पर्यटन, संस्कृतिक आदान–प्रदान जैसे विषय थे व दोनों देश की सेनाओं के बीच किसी भी प्रकार की झडप प्रारम्भ न हो जाए इसे लेकर लिए उपाय करना, साथ ही पूर्व से विद्यमान विवादों को सुलझाने के लिए कार्य करना। हालांकि यह सम्मेलन पूर्व की तरह असफल रहा।

4. व्यापक संवाद का पुनः आरम्भ (2010)

व्यापक संवाद का पुनः आरम्भ (2010) में यह संवाद फिर से प्रारम्भ कर दिया गया। इसे प्रारम्भ करने के लिए दोनों देशों की ओर से प्रयास किया गया था , जिसमें दोनो देशों ने बेहतर द्विपक्षीय संबंध स्थापित करने के लिए आर्थिक और राजनीतिक लाभों को आवश्यक समझा, जिससे दोनो देशो के बीच चल रहे गतिरोध को समाप्त व कम किया जा सके। यह मात्र दो सरकारो के प्रयासो से ही यह संवाद पूणः आरम्भ नही किया गया था बल्कि, दोनो देश की जनता के द्वारा भी इस संवाद को पुनः चालु करने के लिए सरकार पर दबाव बनाने का कार्य भी किया गया जिसमें सुरक्षा, व्यापार पर्यटन, सांस्कृतिक संबंध को पुनः संवाद के घेरे में लाया गया। इस सम्मेलन को आयाजित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समूदाय ने भी अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई। इस संवाद की शुरूआत फरवरी 2011 मे की गई, जिसमे उस समय के भारत के प्रधानमंत्री व पाकिस्तान के प्रधानमंत्री यूसुफ रजा गिलानी ने इस संवाद को आगे बढ़ाया जिसमें 2010 में व्यापार संवाद को बढावा देने के लिए भारत–पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंधों को पुनः जाग्रत करने और क्रियान्वित करने के लिए इस संवाद को आयोजन करना एक महत्वपूर्ण व निर्णायक प्रयास रहा। हॉलाकि इस प्रयास में दोनो देशो के बीच चली आ रही शत्रुता को कम करने व संचार माध्यमों को पुनः स्थापित करने और निरंतर चले आ रहे चुनौतियों को पाटने के लिए आतंकवाद, राजनैतिक अस्थिता और जिन मुद्धों को सुलझाया नही गया है उसे सुलझाने के लिए दोनों देशों ने एक साथ कार्य करने का सकारात्मक पहल उजागर हुई। यह सम्मेलन दोनो देशो के जटिल मुद्धों को उजागर करते हुये दोनों देश के बीच राजनीतिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक जैसे संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया गया।

5. युद्ध विराम समझौता

इस समझौता पर हस्ताक्षर 26 जुलाई 2003 को किया गया, जिसके तहत एल ओ सी पर हिंसात्मक कार्यवाहियों को रोकने पर सहमति जताई गई, जिसमें दोनो देशो ने एल. ओ. सी. पर बड़ी तदाद में सैन्य व हथियारों

की तैनाती को कम करने पर दोनो देशो ने अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त किये, अगर टकराव अत्पन्न होती है तो संयुक्त नियंत्रण क्षेत्र जैसे उपायों के माध्यम से विवादों को सुलझाया जायेगा। इस समझौते का महत्वपूर्ण बिन्दु विश्वास निर्माण उपायों को लागू करने के लिए किया जायेगा। इस समझौता के तहत अनेक बार समझौता किया गया, जिसमें 2010 के संघर्ष विराम समझौता प्रमुख है जो 2008 के 26/11 हमला के बाद दोनो देशों के मध्य शांति स्थापना में किये गए प्रयास के तौर पर देखा जाता है, जिससें एल. ओ. सी. पर संघर्ष में कमी आई, व सेना के मध्य वार्तालाप प्रारम्भ हुवा। 2014 का संघर्ष विराम समझौता जो जनवरी 2014 में सम्पन्न हुआ जिसमें एल. ओ. सी. पर शांति व स्थिरता स्थापित करने व दोनो देश विश्वास को बढ़ावा दियें। 2021 में भी संघर्ष विराम समझौता दोनो देशो के बीच किया गया, जिसमे मुख्यताः एल. ओ. सी. को लेकर दोनो देश की रक्षा मंत्रियो के बीच वार्ता को समय—समय पर आयोजित करने व सी. बी. एम. को लागू करने और इसके क्रियान्वयन के लिए इस समझौता के तहत प्रयास किया गया, जिससे एल. ओ. सी. पर संघष मे कमी आई और दोनो देश के बीच संवाद वार्ता में सुधार देखने को मिला। सितम्बर 2023 में लगातार बढ़ते आतंकवादी घटनाओं व सीमा पार से आए आतंकवादियों ने हिंसा को बढ़ाने का जो कार्य किया था उसे कम करने व एल. ओ. सी. पर शांति बहाल करने, सी बी एम को मजबूत करने आतंकवादी विरोधी कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए यह संघर्ष विराम समझौता किया गया जिसके परिणामस्वरूप बोर्डर पर हिंसक झडप में कमी आई है व आतंकवादी धटनाओं से निपटने का संयुक्त प्रयास मे बढ़ोतरी हुई है।

अतः इन सभी संघर्ष विराम समझौतो के माध्यम से दोनो देश एक—दूसरे के प्रति विश्वास का निर्माण सी. बी. एम. की मजबुती, दोनो देशो के मध्य संचार व्यवस्था का सुचारू रूप से क्रियान्वयन, आतंकवाद के विरूद्ध मिल कर कार्य करना, इत्यादि परिणामतः शांति बहाल करने के लिए दोनो देशों के द्वारा जो प्रयास किया जा रहा है वह बेहद ही महत्वपूर्ण है जो अराजक विश्व को शासन के अधीन करने का प्रयास किये है, भारत—पाकिस्तान के मध्य शांति स्थापना में अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं का महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

2014 के बाद पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने का प्रयास

2014 मे भारतीय राजनीति में परविर्तन के परिणाम स्वरूप एक नई सरकार का गठन किया गया जो दक्षिण पंथ के समर्थन होने के साथ ही साथ पाकिस्तान के साथ संबंध को सुधारना चाहती थी और वर्तमान मे भी इस राजनीतिक दल का उद्धेश्य समान है, लेकिन वार्ता से पूर्व पाकिस्तान के लिए कुछ शर्त भी रखी गई, वह यह है कि आतंकवाद और संवाद दोनों साथ—साथ नही चल सकता अर्थात वार्ता से पूर्व पाकिस्तान को आतंकवाद के प्रति कठोर कदम उठाना होगा। 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी चुने जाने के साथ ही पाकिस्तान के साथ मित्रता का हाथ आगे बढ़ाया जिसकी शुरूआत 2014 के नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को शपथ ग्रहण में बुलाना और अनौपचारिक रूप से वार्ता करना एक महत्वपूर्ण कदम के तौर पर देखा गया था। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के साथ ही उन्हे विरासत में पाकिस्तान के सथ विवाद भी मिले, जिसे सुलझाना उनका उत्तरदायित्व है। भारतीय विदेश नीति के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुये। नेबरहुड प्रथम नीति के तहत प्राथमिकता प्रदान किया, जिसका मुख्य उद्धेश्य पड़ोस के देशों के साथ बेहतर व मित्रता पूर्ण संबंध की स्थापना की जायें, इस उद्धेश्य में पाकिस्तान के साथ भी शांतिपूर्ण संबंध स्थापना का प्रयास किया है जिसमें नेहरू—लियाकत , शिमला , जाशन्दि, सी. बी. एम. समझौता लाहौर, सिन्धु जल समझौता, इत्यादि हैं। 2014 के उपरान्त भारत ने पाकिस्तान के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने के उद्धेश्य व नेबरहुड प्रथम नीति के तहत पाकिस्तान के साथ संबंध को बेहतर करने के उद्धेश्य से 2014 के शपथ ग्रहण समाहरोह मे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के साथ सार्क के सभी देशों के नेताओं को शपथ ग्रहन समारोह में बुलाये थे। इस से यह संकेत मिलता है कि 2014 में निर्वाचित सरकार का अपने पड़ोसियों को लेकर क्या उद्धेश्य व मंशा था। भारत के द्वारा पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को बुलाने के फैसले को विश्व भर में एक सकारात्मक व दोनों देश के बीच शांति स्थापना तथा द्विपक्षीय संबंध में स्थायित्व आने के तौर पर देखा गया। शांति स्थापना में भारत को एक और महत्वपूर्ण कार्य 2015 में प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा, अफगानिस्तान से लौटने के दौरान

अचानक से पाकिस्तान का दौरा करना जिसमें वे नवाज शरीफ के यहाँ शादी समारोह में भाग लेकर दोनो देशो के बीच शांति स्थापना व द्विपक्षीय संबंध को मजबुत करने की दिशा में किया गया कार्य के रूप में देखा गया था लेकिन इस दौरे के 7 दिन के अंदर ही पाकिस्तानी आतंकवादियों ने भारत के पठानकोट के भारतीय वायू सेना के कैम्प पर हमला कर दिया, जिसमें भारत के द्वारा किये गए शांति स्थापना व द्विपक्षीय संबंध को मजबूत करने के काम पर पानी फेर दिया। भारत–पाकिस्तान संबंध में आतंकवाद दोनों देश के संबंध को निर्धारक के रूप मे उभर कर सामने आया जो एक चुनौती है। सितंबर 2016 में उरी में पाकिस्तानी आतंकवादीयों ने हमला किया, जिसमें 18 सैनिक शहिद हुये थे, जिसके प्रतिउत्तर में भारतीय सेना के द्वारा पाकिस्तान के अंदर जा कर सर्जिकल स्टाइक को अंजाम दिया गया, जिसके उपरांत दोनो देश के संबंध में कड़वाहट देखी गई। भारत के द्वारा आतंकवादी हमला में पाकिस्तान में पल रहें आतंकवादीयों को दोषी पाया, इसलिए भारत के द्वारा पाकिस्तान पर यह दबाव बनाया गया कि वह पाकिस्तान में रह रहे आतंकवादीयों पर कार्यवाही करें, लेकिन पाकिस्तान अपने घरेलु राजनीति के कारण यह नही कर सका। पाकिस्तान के द्वारा आतंकवाद को बढ़ावा और कश्मीर को अंतराष्ट्रीय मुद्धे के तौर पर पेश करने की नीति ने भारत के साथ अपने संबंध को सामान्य करने पर जोर नही दिया। भारत–पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार से दोनों देश के बीच संबंध सुधारे जा सकते है, लेकिन पाकिस्तान के द्वारा आतंकवादीयों को दियें जा रहे प्रोत्साहन ने भारत की सुरक्षा चिन्ता को बढ़ाया, जिससे दोनो देश के व्यापारिक संबंध प्रभावित हुए।

2018 में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में इमरान खान चुने जाने के बाद पाकिस्तान के द्वारा कश्मीर मुद्धे को मध्यस्थता के द्वारा सुलझाने का प्रयास किया गया, लेकिन भारत ने शिमला समझौता का पालन करते हुए इसे दोनो देश मिल कर सुलझाने की नीति को बढ़ावा देते आ रहा है। इमरान खान ने भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने के अनेक प्रयास किये, लेकिन आतंकवादी नीति के कारण वे भारत को विश्वास में नही ले सके। भारत ने हमेशा से पाकिस्तान के संबंध सुधारने की नीति को अपनाया है लेकिन यह पाकिस्तान की घरेलु राजनीति व पाकिस्तान की राजनीति पर पाकिस्तानी सेना के वर्चस्व के कारण विफल होता आया है। 14 फरवरी 2019 मे भारतीय सेना पर हुए सबसे बड़ा आतंकी हमला, जिसमें पाकिस्तान से संबंध रखने वाले आतंकवादी समूह ने इसका जिम्मा लिया व पाकिस्तानी आतंकवादीयों के खिलाफ सबुत मिले, जिसके परिणामस्वरूप भारत ने पाकिस्तान के बालाकोट स्थित आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों पर एयर स्टाइक किया, जिसमें अनेकों आतंकवादी मारे गयें। इस घटना ने दोनो देशो के बीच विवाद को बढाने का काम किया। हालॉकि भारत–पाकिस्तान सीमा के बीच करतारपूर कोरिडोर खुलने से दोनो देश के बीच संबंध में एक नई उर्जा देखने को मिली, जिससे भारत में रह रहे सिख धर्म मानने वाले बन्धु करतारपूर कोरिडोर के माध्यम से गुरू नानक जी के जन्म स्थल का दर्शन के लिए हैं। करतारपूर कोरिडोर दोनों देश के बीच सी0बी0एम जैसे घटको के सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। 5 अगस्त 2019 को भारतीय संसद ने अनुच्छेद 370 को रद्ध कर दिया जिसके उपरांत पाकिस्तान के तरफ से भारत के साथ द्विपक्षीय संबंध व व्यापारिक को स्थगित करने का काम किया।

यू.ए.ई. के द्वारा किये गए मध्यस्थता के कारण 2021 में दोनों देश के बीच सिज फायर समझौता हो पाया, यह मध्यस्थता अनौपचारिक था, जिसके माध्यम से दोनो देश के बीच शांति स्थापना काफ़ी कारगर रही। इस समझौता को पूर्ण करने के कई सारे कारण थे, पहला कारण तो यह था कि 2021 में विश्व करोना से लड़ रहा था, जिसके कारण विश्व आर्थिक मन्दी की ओर जा रहा था। पाकिस्तान जैसे कर्ज में डुबे देश के लिए भारत के साथ सीज फायर समझौता का लाभदायक सौदा रहा, परन्तु यह सौदा दोनो देश के महत्वपूर्ण है, जो 2003 के सीज फायर समझौता को बढावा देने के साथ सी.बी.एम. को मजबूती प्रदान करता है। 2024 में, 10 वर्ष के बाद भारत के विदेश मंत्री पाकिस्तान में एस.सी.ओ. के बैठक के लिए गयें जो एक ऐतिहासिक है, जिसका परिणाम आने वाले समय में जरूर दिखेगा, जबकि यह दौरा भारत के किसी विदेश मंत्री का दौरा 2015 में बाद यह दौरा किया गया।

निष्कर्ष

भारत–पाकिस्तान के बीच शांति स्थापना विश्व के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण है जिससे विश्व में स्थिरता आयेगी

साथ ही दोनो देश के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। पूर्व में शांति स्थापना के लिए अनेक प्रयास किए गए है कुछ सफल रहे तो कुछ असफल रहे लेकिन दोनो देश के बीच शांति स्थापना के लिए प्रयास जारी है। विश्व के अनेक देशों व अंतराष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा प्रयास कियें जाते रहे है। हालांकि शांति स्थापना में कई सारे अवरोध उत्पन्न करने वाले घटक यह नही चाहते कि दोनो देश के बीच शांति स्थापित हो।

संदर्भ सूची

1. जयशंकर, एस. (2020) *द इंडिया वेः अनिश्चित विश्व के लिए रणनीतियाँ,* हार्परकॉलीन्स, नोएडा, इंडिया।
2. दीक्षित, जे. एन. (2020) *भारत–पाक संबंध (युद्ध और शांति में),* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. Basit, A. (2021) *Hostility: A diplomat's diary on Pakistan-India relations,* HarperCollins, New York.
4. Haqqani, Husain (2016) India Vs Pakistan: Why can't we just be friends. Juggernaut. New Delhi.
5. Raghavan, T.C.A. (2017) *The People Next Door: The Curious History of India-Pakistan Relations,* HarperCollins, New York.

****